शंकराचार्य माधवाश्रम जी महाराज

हेमंत चौकियाल

साहित्य, संगीत, ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान के साथ साथ आध्यात्म के साथ भी उत्तराखंड के छोटे से जिले रूद्रप्रयाग का गहरा नाता है।

इतिहास के पन्नों को टटोले तो पता चलता है कि इस जनपद के अलकनंदा व मन्दाकिनी के संगम स्थल पर त्रेता युग में भगवान शंकर ने महर्षि नारद को संगीत की शिक्षा दी तो इसी जनपद के त्रियुगीनारायण मन्दिर में शिव पार्वती के विवाह होने का वर्णन मिलता है।अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जी के समकालीन बाणासुर नामक राजा की पुत्री ऊषा का विवाह श्रीकृष्ण के पौत्र अनुरूद्ध के साथ होने की साक्षी ऊखीमठ मन्दिर में अवस्थित विवाह वेदी आज भी विद्यमान है। इस विवाह का जिक्र आज भी यहाँ मन्दिर में गाये जाने वाले जागरों में होता है।सिनेमा के क्षेत्र में भटवाड़ी गांव की सुपुत्री हिन्दी फिल्मों में हिमानी शिवपुरी के नाम से मशहूर है। साहित्य के क्षेत्र में संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि कालीदास भी इसी जनपद के कविल्ठा गांव के वासी रहे हैं। कालीदास के अलावा हिन्दी के कालीदास कहे जाने वाले चन्द्रकुँवर बर्त्वाल इसी जनपद के मालकोटी गांव के निवासी थे।

दक्षिण के परमपूज्य महर्षि अगस्त्य का उत्तर भारत में एकमात्र मन्दिर भी इसी जनपद के नाकोट गांव में है, जिसे अब अगस्त्य ऋषि के नाम से अगस्त्यमुनि के नाम से जाना जाता है। ऐसे ही धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में भी एक हस्ती ने इस जनपद को गौरवान्वित किया, वो हस्ती रही हैं श्रृंगेरी पीठ के शंकराचार्य

जगतगुरु माधवाश्रम जी महाराज।

इससे पहले कि हम माधवाश्रम जी के बारे में जानें, आइए पहले जान लेते हैं कि ये जगतगुरु की पदवी क्या है?

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व युधिष्ठिर सम्वत 2631(509B.C.) की बैशाख शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को जन्मे जगतगुरु आदिशंकराचार्य जी ने भारत के चारों दिशाओं में चार वैदिक पीठ स्थापित किये। 11वर्ष की अवस्था में केदारनाथ-बद्रीनाथ आकर केदार-बद्री की पूजा कर सोलह भाष्यों की रचना की। इन वैदिक पीठों की स्थापना का उद्देश्य वेदों, जगतगुरू आचार्य परम्परा, सनातन धर्म और वेदों को सांस्कृतिक - वैचारिक युद्धों, विध्वंसकों, आक्रमणकारियों, आघातों से बचाकर सुरक्षित रखना था। उन्होंने हरेक पीठ को एक वेद प्रदान करते हुए, प्रत्येक पीठ के लिए उसके कर्तव्य, उद्देश्य और उत्तरदायित्व भी निर्धारित कर दिये। भारत के चारों दिशाओं में स्थापित इन पीठों में से उत्तर दिशा में श्री ज्योतिर्मठ बद्रीनाथ को अथर्ववेद प्रदान करते हुए इसे "अथर्ववैदिय उत्तरान्माय श्री ज्योतिर्मठ कहा जाता है। इसी प्रकार पश्चिम दिशा में श्री शारदामठ (कालिका मठ) द्वारका, गुजरात में स्थापित करते हुए सामवेद प्रदान किया। दक्षिण दिशा में श्रृंगेरी मठ की स्थापना श्रृंगगिरी कर्नाटक में करते हुए यजुर्वेद प्रदान किया। पूर्व दिशा में पुरी (उड़ीसा) में गोवर्धन मठ स्थापित करते हुए इसे ऋग्वेद प्रदान किया। आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा स्थापित सतानत धर्म के इन 4 पीठों में प्रमुख ज्योतिष्पीठ के पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले धर्मधुरंदर तथा उदभट विद्वान स्वामी माधवाश्रम जी का जन्म उत्तराखंड प्रदेश केदारनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर रूद्रप्रयाग जनपद मुख्यालय से 18कि०मी० की दूरी पर, ऋषि अगस्त्य की तपस्थली अगस्त्यमुनि के नजदीकी गाँव बेंजी में 26 अगस्त 1944 को हुआ।

भगवान नरसिंह के आराधक एवं कर्मकाण्ड तथाज्योतिषी पिता रविदत्त बेंजवाल और गृहणी माता श्रीमती झाँपली देवी के घर जन्मे बालक का नाम केशवानन्द रखा गया। केशवानन्द के सहपाठी बेंजी गाँव के ही श्री चन्द्रशेखर बेंजवाल जो केशवानन्द के सहपाठी रहे हैं ने बताया कि हम दोनों ने ही प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 1से 5)गाँव के ही आधारिक विद्यालय बेंजी,(जो तब कोटखण्डी नामक स्थान पर (डाँगी - गुनाऊँ-बेंजी

 ISSN:2583-8849

गाँव का सम्मिलित विद्यालय) में प्राप्त की। तब केशवानन्द खूब नटखटी भी थे। आध्यात्मिक झुकाव उनमें तब ही था। कुछ देर के नटखटपन और शरारतों के बीच एकाएक केशवानन्द चुपचाप हो जाते और एकान्त में से खो जाते। कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा पब्लिक हाई स्कूल अगस्त्यमुनि में (जो 1965में राजकीय इन्टर कॉलेज बनाऔर अब स्व० हरिदत्त बेंजवाल आदर्श इण्टर कॉलेज के नाम से जाना जाता है) हुई। इसके बाद की शिक्षा उन्होंने संस्कृत पाठशाला मैकोटी (मयकोटी) से उत्तीर्ण कर,आगे के अध्ययन के लिए हरिद्वार चले गये। आगे के अध्ययन के लिए अम्बाला के सनातन धर्म संस्कृत कॉलेज में गये। वृदांवन के वंशीवट में श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के आश्रम एवं वाराणसी समेत देश के विभिन्न स्थानों पर वेदों एवं धर्मशास्त्र की दीक्षा ली। इधर गाँव में पिता ने जीविकोपार्जन में कृषि कार्य को प्रधानता होने के कारण परिजनों ने गृहस्थ जीवन में घसीट लिया, लेकिन ज्ञान के लिए वैराग्य की भावना के बलवती होने के कारण गृहस्थ भी केशवानन्द को नहीं बाँध पाया। हिमाचल प्रदेश स्थित कण्डाघाट में साधनालीन होकर पाँच वर्षों की तपस्या में आध्यात्मिक एवं चमत्कारिक अनुभवों को आत्मसात करके स्वामी जी ने श्रीमद्भागवत के पारायण एवं कथा वाचन को सनातन धर्म प्रचार का मार्ग चुना।

21वर्ष की आयु में स्यूंड गाँव में श्रीमद्भागवत की कथा कर अपनी विद्वता की छाप छोड़ने के बाद वापस काशी पहुंचकर शिक्षा के साथ ही धर्मग्रन्थों का अध्ययन जारी रखा। 22वें वर्ष में श्रीमद्भागवत का 108बार निरंतर पाठ करने के बाद स्वामी करपात्री जी ने इस विलक्षण विद्वान को "शुकदेव" की उपाधि से विभूषित किया। उनकी विद्वता की चर्चा विद्वत परिषद, धर्मसंघ और देश के शीर्षस्थ संतों में होने लगी। यमुना के तट, पक्के घाट, बागपत (उ०प्र०) जाकर शंकराचार्य जोतिष्पीठाधीश्वर स्वामी कृष्ण बोधाश्रम महाराज के सानिध्य में मन्त्र दीक्षा लेकर स्वामी बने। गुरू के आदेश पर शुक्रताल दण्डी आश्रम जाकर 108अखण्ड भागवत मूल पारायण किये। समय आने पर जगद्गुरू जी ने सन्यास दीक्षा देकर दण्ड ग्रहण कराया और दण्डी स्वामी माधवाश्रम महाराज नाम दिया। दण्डी सन्यासी बनने के उपरान्त वैदिक धर्म संस्कृति का पूरे देश में प्रचार करने के लिए भ्रमण किया।

27नवम्बर 1993 को शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ की अध्यक्षता में काशी विद्वत परिषद, धर्मसंघ और भारत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी के शिष्य स्वामी माधवाश्रम जी को ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य के पद पर प्रतिष्ठित किया।

24वर्षों तक धर्म की रक्षा और सनातन परम्पराओं, रोटी, बेटी,चोटी सूत्र का प्रतिपादन करते हुए गौ, गंगा, हिमालय संवर्धन, गोवध निषेध की रक्षा करते हुए 18संस्कृत महाविद्यालयों की स्थापना, जिनमें से 4नेपाल में हैं, के साथ कई मन्दिरों, औषधालयों, चिकित्सालयों की स्थापना और जीर्णोद्धार के साथ साथ निर्धन बालकों की शिक्षा हेतु आधुनिक विद्यालयों की स्थापना की।अप्रैल 2000 में स्वामी माधवाश्रम जी ने उत्तराखंड की आध्यात्मिक, बौद्धिक, एवं पर्यावरणीय सम्पदा से परिचय कराने के लिए देश के श्रेष्ठतम आचार्यों, विद्वतजनों और विदूषी महिलाओं को रूद्रप्रयाग के कोटेश्वर तीर्थ में आमन्त्रित कर अष्टादश पुराण व एकादश कुण्डीय रूद्र महायज्ञ का आयोजन करवाया। उनके गृहजनपद के इसी तीर्थ स्थल में एक बड़ा अस्पताल माधवाश्रम अस्पताल के नाम से अब उनकी याद में अपने यौवन की ओर अंगडाई लेकर सरकारी अस्पताल बनने की ओर अग्रसर है। स्वामी माधवाश्रम जी ने कहा गोवर्धन पूजा के पावन पर्व के दिन 20 अक्टूबर 2017को 73वर्ष की उम्र में देहत्याग किया।21 अक्टूबर को उनकी पार्थिव देह को मायाकुण्ड ऋषिकेश स्थित दण्डीवाड़ा श्री जनार्दन आश्रम में भू समाधि दी गई।इस भू समाधि की एक यादगार बात यह रही कि उनके इस परिनिर्वाण में उनके वंशज और अगस्त्यमुनि के विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों में बढ़चढ़ कर प्रतिभाग करने वाले दस्तक के संपादक, संस्कृति प्रकाशन के स्वामी, युवा इतिहास कार व सामाजिक कार्यकर्ता दीपक बेंजवाल द्वारा माधवाश्रम जी की जन्मभूमि की मुट्ठी भर मिट्टी उनकी समाधि को समर्पित कर श्रध्दांजलि दी गई।श्री बेंजवाल ने अगस्त्य ऋषि व अगस्त्यमुनि के बारे में ऐतिहासिक साक्ष्यों सहित "अगस्त्य अर्घ्य" नामक संग्रहणीय पुस्तक लिखकर एक बेहतरीन ग्रंथ समाज को सौंपा है।

रूद्रप्रयाग (उत्तराखंड)